डॉ0 राममनोहर लोहिया के सामाजिक एवं आर्थिक विचारों का मूल्यांकन

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

डॉ0 लोहिया अन्याय को सहना अनैतिक मानते थे। इसी प्रकार अन्याय का विरोध न करना वे अनैतिक मानते थे। डॉ0 लोहिया ने भारत के नेताओं और राजनैतिक दलों को यही सिखलाया कि सशक्त विपक्ष की भूमिका कैसे निभाई जाती है। लोकसभा में डॉ0 लोहिया जी की पार्टी के दर्जन भर सदस्य भी नहीं होते थे लेकिन वहाँ बादशाहत उनकी ही चलती थी। वे सादगी और सच्चाई की प्रतिमूर्ति थे। वे जिस विषय पर भी बोलते थे, उसमें मौलिकता और निर्भीकता होती थी। वे सीता–सावित्री पर बोले, अंग्रेजी हटाओ या जात तोड़ो पर बोले– उनके तर्क प्राणलेवा होते थे। जो एक बार डॉ0 लोहिया को सुन ले या उनको पढ़ ले, तो वह उनका मुरीद हो जाता था।

बात उस समय की है, जब सन् 1933 ई0 में डॉ0 लोहिया डाक्टरेट की डिग्री के साथ भारत लौटे तो लोग समझते थे कि किसी कालेज या यूनिवर्सिटी में प्रोफेसरी करेंगे। लेकिन डॉ0 लोहिया सीधे गाँधी जी के पास गये क्योंकि उनका यह फैसला जर्मनी में ही प्रो0 देसनागर के पूछने पर कि ''अब तुम भारत जाकर क्या करोगे?'' उन्होंने कहा था – ''प्रोफेसरी तो नहीं करूँगा।'' स्पष्ट हो गया था। डॉ0 लोहिया जब भारत पहुँचे तो पता चला कि उनके पिता (श्री हीरालाल लोहिया) चार सौ सत्याग्रहियों के साथ प्रेसीडेन्सी जेल में कैद हैं। जवाहरलाल नेहरू कैद किये जा चुके हैं। गाँधीजी गोलमेज से लौटते ही कैद कर लिये जा चुके हैं। खान अब्दुल गफ्फार खाँ को अंग्रेजों ने कैद करके बर्मा जेल भेज दिया है। देश में हर जगह धरपकड़ हो रही है। डॉ0 लोहिया को कुछ समय देश की स्थिति समझने में लगा। इसी बीच उनके चाचा रामकुमार लोहिया ने उन्हें व्यापार करने की सलाह दी तो लोहिया ने कहा– ''व्यापार में पैसा लगता है। मेरे पास पैसा कहाँ है ?'' चाचा ने कहा कि ''पैसे की कमी नहीं होगी। व्यापार तो बताओ।'' लोहिया ने कहा –''भारत से अंग्रेजों को बाहर निकालने का व्यापार है। मैं यही करना चाहता हूँ।'' डॉ0 लोहिया के इस विचार से उनके चाचा अत्यधिक नाराज हुए, लेकिन डॉ0 लोहिया पर उस नाराजगी का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और अत्यन्त संकटपूर्ण आर्थिक विषमता में भी वे झुके नहीं। लोहिया ने तत्काल ही फैसला कर लिया कि हमें देश कार्य (सेवा) में जी जान से जुट जाना है। यही हमारे जीवन का लक्ष्य होगा।

डॉ0 लोहिया ने विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त का भी प्रतिपादन किया। साम्यवादियों की तरह बड़े–बड़े कारखाने न लगाकर लघु मशीनों को कुटीर व गृह उद्योग को महत्व दिया जाय जिसमें कम पूंजी से अधिकाधिक मनुष्यों को कार्य मिल सके। सामाजिक–आर्थिक न्याय के लिए आर्थिक शक्ति राज्य के हाथों में देने के पक्षधर थे लेकिन निरंकुश शासन कतई नहीं स्वीकार था और वे राजनीतिक–आर्थिक सत्ता को देश, प्रान्तों, जिला व ग्राम स्तर पर बांटकर चौखम्भा समाजवाद की स्थापना करना चाहते थे। डॉ0 लोहिया एक ऐसी अर्थनीति अपनाना चाहते थे। जिसमें समाजवादी अर्थनीति एवं समतामूलक समाज की स्थापना हो

। उनका विचार था किसी को बहुत अधिक और किसी को बहुत कम नहीं होना चाहिए। उनका यह सपना पूरा नहीं हुआ। आज भारतीय तंत्र में विषमता दिन व दिन बढ़ती जा रही है। पूंजी, नेताओं, अभिनेताओं, उद्योगपतियों, अफसरों और धर्माचारियों के पास सुरक्षित हो गई है। आज यह विषमता चरम बिन्दु को छू रही है। गरीबी बढ़ रही है। अमीर अमीर होता जा रहा है। वर्तमान 2012 में एक ओर सरकार मात्र कुछेक रूपये प्रति थाली खाने वाले को गरीब की श्रेणी में नहीं मानती। जबकि उपर्युक्त लोग पांच सितारा होटलों का जीवन जीते हैं। उनका विचार था कि अर्थनीति में पूर्ण बदलाव होना चाहिए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, गैरबराबरी समाप्त होना चाहिए। समाजवादी आन्दोलन के इतिहास में उन्होंने व्यक्तिगत सम्पत्ति कितनी होनी चाहिए। इस विषय पर विचार व्यक्त किये हैं।

सन् 1963 ई0 के फर्रुखाबाद के लोकसभा के उपचुनाव में संसद पहुँचकर प्रथमत : ''तीन आना बनाम पन्द्रह आना'' की बहस अत्यंत चर्चित रही, जिसमें उन्होंने 18 करोड़ आबादी के चार आने पर जिंदगी काटने तथा प्रधानमंत्री पर 25 हजार रूपये प्रतिदिन खर्च करने का आरोप लगाया। डॉ0 लोहिया, 'खर्च की एक सीमा हो,' इस सिद्धान्त के पक्षधर थे डॉ0 लोहिया ने लोकसभा में अपने प्रथम भाषण में कहा था– मैं चाहता हूँ कि यह हमेशा याद रखा जाए कि 27 करोड़ आदमी तीन आने रोज के खर्च पर आज जिन्दगी चला रहा है ..... मैं खाली यह बताऊँगा कि हमारे देश में खेतिहर मजदूर 12 आने रोज कमाता है क, ख, ग, या अलिफ, बे, पे, पढ़ाने वाला अध्यापक 6 रूपये रोज कमाता है और प्रधानमंत्री पर 25–30 हजार रूपये खर्च होता है। इस प्रकार लोहिया ने नेहरु के सरकारी तंत्र के मुगलिया ठाट–बाट की निंदा इतने कड़े शब्दों में की थी कि सारा तंत्र भर्राने लगा था। उन्होंने देश के हजारों नौजवानों में सरफरोशी का जोश भर दिया था। सारे देश में तरह–तरह के मुद्दों पर सिविल नाफरमानी के आन्दोलन चला करते थे। कहीं जेल भरो, कहीं रेल रोको, कहीं अंग्रेजी नाम पट पोतो, कहीं जात तोड़ो, कहीं कच्छ बचाओ, कहीं भारत पाक एका करो जैसे आंदोलनों में अहिंसा का ऊँचा स्थान था। लोहिया अहिंसात्मक आंदोलनों तथा सिद्धातों के प्रबल समर्थक रहे है– सत्याग्रही के रूप में ''मारेंगे नहीं पर मानेगे नहीं'' ।

लोहिया जी स्त्री को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। वे नारी को 'समान कार्य के लिए समान वेतन' ही नहीं अवसर और विधि की समानता, वरन् नारी की प्राकृतिक कमजोरी की क्षतिपूर्ति के लिए 'विशेष अवसर के पक्षपाती' थे। डॉ0 लोहिया स्त्री को प्रत्येक दृष्टिकोण से समान देखना चाहते थे। उनकी सक्रियता को प्रत्येक क्षेत्र में अनिवार्य मानते थे। डॉ. लोहिया ने एक तर्कयुक्त प्रश्न उठाया–किसको पसन्द करोगे? जो आपके प्रति अपना प्रेम, अपनी भक्ति, अपना आदर, आपके मरने के बाद आपके शरीर के साथ या शरीर के बिना जलकर दिखाए या ऐसी औरत पसन्द करोगे जो आप ही के साथ या आपके आगे–पीछे देश की रक्षा करते हुए स्वयं अलग से मरे।' शताब्दियों से चली आ रही नर–नारी असमानता को लोहिया ने समाजवाद के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा माना। 'यदि वास्तव में समाजवाद की स्थापना करनी है तो हिन्दू–पुरूष के पक्षपाती दिमाग को ठोकर मार–मार के बदलना होगा। नर–नारी के बीच में बराबरी कायम करनी होगी। स्त्रियों की स्वतन्त्रता के पक्षधर डॉ0 लोहिया का मानना था कि जब तक समाज में स्त्रियों को बराबरी का अधिकार नही मिलता तब तक किसी भी हिस्से में समानता की बात सोचना बेमानी होगा। वे खुले मंच से घोषणा करते थे कि आजाद हिंदुस्तान में प्रत्येक आदमी राजा है, चाहे वह मर्द हो या फिर औरत। औरतें भी अपने हक से राजा होंगी, राजा की पत्नी होने के नाते रानी नहीं।

भारतीय संस्कृति में नर–नारी के बीच गैर बराबरी होने के कई कारण मौजूद हैं, पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में लड़की के जन्म को दुखद माना जाता है, इसका एक कारण भारतीय समाज में प्रचलित दहेज प्रथा है। डॉ0 लोहिया भारतीय पुरूष की इस मानसिकता पर प्रश्न करते थे कि पुरूष चाहता है कि नारी अच्छी भी हो, बुद्धिमान भी हो और उसके कब्जे में रहे, अधीन रहे। लोहिया कहते हैं, किसी सजीव को आप अपने अधीन बना देना चाहते हैं तो फिर वह चपल, चतुर, सचेत, सजीव वाले अर्थ में नहीं हो सकती। तब वह जिंदादिल, जिंदा शरीर, तेज, बुद्धिमान नहीं हो सकती। डॉ0 लोहिया कहते हैं कि नारी को यदि परतंत्र बनाकर रखना है तब उससे यह अपेक्षा नहीं रखो कि वह अच्छी हो और यदि उसे स्वतंत्रता दी जाए तो वह उतनी ही बढ़िया होगी जितना पुरूष होता है। वे नारी को घर के अंदर छुपाकर रखना, दबाकर रखना आदि को गंभीर अपराध मानते थे। उनके विचारों में पर्दाप्रथा चरित्र और प्रगति दोनों के विपरीत है। डॉ0 लोहिया के तार्किक वक्तव्यों से यह प्रतीत होता है कि संवैधानिक लक्ष्य समानता का प्राप्त इसलिए नहीं कर पाए क्योंकि समाजीकरण की प्रक्रिया में उसे भागीदारी नहीं मिल पाती। और अंततः नारी अपने विवेक के अनुसार काम नहीं कर पाती। भारतीय नारियों को साहसी व विवेकवान बनने का आह्वान करते हुए डॉ0 लोहिया ने विदेशी महिला श्रीमती ब्लेक का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय नारियों को रानी पद्मिनी के समान नहीं बनना चाहिए बल्कि उन्हें श्रीमती ब्लेक का अनुसरण करना चाहिए जिनके पति की मृत्यु हवाई उड़ान में हो गई थी। तभी उन्होंने वायरलैस सेट के द्वारा हवाई सम्पर्क द्वारा निर्देश प्राप्तकर जहाज को नीचे उतारा और इस साहसिक कार्य के माध्यम से वे स्वयं के जीवन की रक्षा कर पाई। डा0 लोहिया आजीवन जिन व्यक्तियों के प्रशंसक रहे, उनमें ग्रेटा गार्बो भी थीं। वह अनुपम सुंदरी और श्रेष्ठ अभिनेत्री थीं और स्वतंत्र व्यक्तित्व की धनी थीं। भारतीय इतिहास की कुछ प्रसिद्ध नगरबन्धुओं के प्रति भी डा0 लोहिया के मन में कुछ वैसा ही आदर था, विशेषतः बुद्ध की शिष्या आम्बपाली के प्रति।

डॉ0 लोहिया स्त्रियों को गुड़िया या भोग की वस्तु मानने को तैयार न थे। उनका मानना था कि भारत की महिलायें पुरूष से अधिक निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता बनें। डॉ0 लोहिया के मन में स्त्री जाति के बारे में बहुत आत्मीयता और ममता थी। उन्होंने कहा था–'कालिदास की नायिका तन्वीश्यामा साँवले रंग की ही थी, भारत की सबसे तेजस्वी स्त्री द्रोपदी कृष्ण वर्ण की थीं। डॉ0 लोहिया कहते हैं कि 'स्त्री कभी बदसूरत नहीं होती, कोई ज्यादा, कोई कम सुन्दर होती है, इतना ही नहीं। शादीशुदा, दस बार माँ बनने वाली औरत से अविवाहित माँ ज्यादा चरित्रवान होती है।' वे स्त्री को कहते थे, 'पुरूष का बोझ मत बनो, द्रोपदी की तरह उसकी पथ प्रदर्शक बनो।' डॉ0 लोहिया की दृष्टि में स्त्री पुरूष से कहीं अधिक शक्तिशाली एवं सम्मानीय है। डॉ0 लोहिया ने नर–नारी असमानता को केवल स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं रखा था । इस असमानता का कारण वह जाति, साम्प्रदायिकता रंग–भेद और अस्पृश्यता को भी मानते थे। उनका विश्वास था कि यदि इन बुराइयों के विरुद्ध एक साथ आन्दोलन किया जाए तो नर–नारी की असमानता दूर हो सकती है। डॉ0 लोहिया कुछ मुद्दों पर तुरन्त कार्यवाही करना चाहते थे जो इस प्रकार हैं : योनि शुचिता के नये आदर्श,सखा भाव से लेकर मैत्री भाव तक नर नारी के आचार विचार में स्वतंत्रता,इच्छानुसार वर–वधू चयन,स्वेच्छा और सदाचार की नयी नैतिक चेतना,दहेज प्रथा का बहिष्कार । उनका विचार था कि इन मुद्दों पर आन्दोलन तीव्रता से

गति पकड़े तो नर–नारी समानता को सही दिशा मिल सकती है। डॉ0 लोहिया जी ने पिछड़ों के उत्थान के लिए विशेष अवसर के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। वे चाहते थे कि हिन्दुस्तान की नारियों के अंदर द्रोपदी की तेजस्विता पुनः स्थापित हो। वे रजिया के समान सत्ता की केन्द्र बने।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- वर्मा श्रीकांत रचनावली,खंड–3
- कथाक्रम, अप्रैल–जून 2011
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- पाठक नरेन्द्र–कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008
- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाधी मार्ग, इलाहाबाद – 211001, पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास – चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- भाटिया पी.आर. – भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमारआनन्द, कुमार, मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम मनोहर लोहिया – अनामिक ाप्रकाशन, नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- *The Secret Film*, www.Thesecret.tv (रहस्य)
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया – हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011

Copyright © 2014, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.